२ यीशु महान गुरू

- तैयारी के वर्ष
- यीशु का अभिषिक्त किया जाना
- देहाती स्त्री को शिक्षा देना
- एक धनवान को शिक्षा देना

तैयारी के वर्ष

यीशु लोगों की आवश्यकता पहचानने लगे

यीशु का बाल्यकाल गलील के नासरत नगर में बीता। नासरत दो बड़े बन्दरगाह, टायर और सिद्दोन तथा यरूशलेम को जोड़ने वाली राष्ट्रीय सड़क के मध्य में बसा हुआ था। बुराइयां इतनी अधिक थीं कि लोग कहने लगेः "क्या कोई अच्छी वस्तु नासरत से निकल सकती है?" यीशु ने लोगों के पापों को देखा कि वे कितने स्वार्थी, भ्रष्ट, अत्याचारी और परमेश्वर के विरोधी थे। उसने देखा कि सभी लोग पाप के गुलाम बन चुके थे।

जब यीशु और यूसुफ बढ़ई का काम करते थे, तब यीशु ने सुना कि लोग रोमी सरकार से स्वतंत्रता पाना चाहते थे। लेकिन यीशु जानता था कि राजनैतिक स्वतंत्रता लोगों की समस्या का हल नहीं था। पापों की गुलामी से छुटकारा पाने की आवश्यकता थी। इसी छुटकारे को देने के लिए यीशु जगत में आया था। यीशु का अर्थ "उद्धारकर्ता" है। स्वर्गदूत ने यूसुफ के कहा था :

> "तू उसका नाम यीशु रखना क्योंकि वह अपने लोगों का, उनके पापों से उद्धार करेगा।" मत्ती १:२१

यीशु परमेश्वर का वचन सीखने लगे

परमेश्वर के वचन का अध्ययन कर यीशु अपने जीवन कार्य के लिए तैयार हुए। बारह वर्ष की आयु में ही यीशु अपने शिक्षकों से कहीं अधिक समझते थे। वह वचन से प्रेम और सदैव उसका पालन किया करते थे।

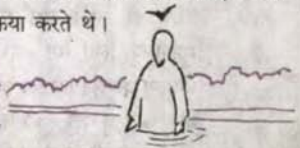

यीशु का बपतिस्मा

तीस वर्ष की उम्र से यीशु नासरत छोड़कर शहरों और गांवों में परमेश्वर की

शिक्षा देने लगे। परमेश्वर ने यीशु को यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले के पास भेजा। यूहन्ना ने यीशु को यर्दन नदी में बपतिस्मा दिया।

> यीशु बपतिस्मा लेकर तुरन्त पानी में से ऊपर आया, और देखो, उसके लिए आकाश खुल गया: और उसने परमेश्वर के आत्मा को कबूतर की नाईं उतरते और अपने ऊपर आते देखा। और देखो, यह आकाशवाणी हुई कि यह मेरा प्रिय पुत्र है जिससे मैं अत्यन्त प्रसन्न हूं। मत्ती ३:१६-१७

उत्तर लिखें

१. रिक्त स्थानों की पूर्ति करें:

"यीशु" नाम का अर्थ है.....

यीशु का बपतिस्मा.....नदी में .....

बपतिस्मा देने वाले के द्वारा हुआ।

परमेश्वर ने कहा: "यह मेरा प्रिय.....है।"

२. यीशु अपने लोगों का किस से छुटकारा करेंगे?

..... क) रोमी राज्य से

..... ख) गरीबी तथा बीमारी से

..... ग) उनके पापों से

यीशु का अभिषिक्त किया जाना

नबियों, याजकों और राजाओं का अभिषेक तेल से किया जाता था ताकि पवित्र आत्मा की सहायता परमेश्वर के काम में प्रकट हो। प्रतिज्ञानुसार उद्धारकर्ता ही मसीह कहलाया। मसीह का अर्थ है, "अभिषिक्त किया गया।" यशायाह नबी ने उसके विषय में लिखा:

> "प्रभु की आत्मा मुझ पर है, इसलिए कि उसने कंगालों को सुसमाचार सुनाने के लिए मेरा अभिषेक किया है, और मुझे इसलिए भेजा है कि बन्धुओं को छुटकारे का और अन्धों को दृष्टि पाने का सुसमाचार का प्रचार करूं और कुचले हुओं को छुड़ाऊं। और प्रभु के प्रसन्न रहने के वर्ष का प्रचार करूं।" लूका ४:१८-१९

यशायाह की नबूवत यीशु में पूरी हुई। वह जगह-जगह जाकर सुसमाचार का प्रचार करता रहाः बीमारों को छूकर चंगा कियाः अन्धों को दृष्टि दी और पाप से बन्धुओं को छुटकारा दिया। यीशु ने इस नबूवत के विषय में कहाः "आज ही यह लेख मुझ पर पूरा हुआ है।"

उत्तर लिखें

३. लूका ४:१८-१९ को मुखाग्र करें।

४. किस नाम का अर्थ है "अभिषिक्त किया गया"?

.....

५. यीशु क्योंकर बीमारों को चंगा कर सके?

..... क) वह चंगाई करना जानता था।

..... ख) उसने दवाइयों का ज्ञान पाया था।

..... ग) चंगा देने के लिए पवित्र आत्मा ने उसका अभिषेक किया था।

देहाती स्त्री को शिक्षा देना

यीशु का सामरिया होकर जाना

यीशु ने अपनी सहायता करने के लिए बारह चेलों को चुना। इनमें से मत्ती और यूहन्ना नें यीशु के जीवन के विषय में लिखा। यूहन्ना ने यीशु का सामरिया में जाने का वर्णन किया।

गलील से यरूशलेम को एक छोटा रास्ता सामरिया प्रान्त से होकर जाता था। बहुत से यात्री लम्बे रास्ते से होकर यरूशलेम जाया करते थे क्योंकि वे सामरिया को नीच दृष्टि से देखते थे। वे दूसरी जाति के थे। परन्तु यीशु सामरियों के विषय में ऐसा नहीं सोचते थे। यीशु सभी जाति से समान प्रेम करते थे। परमेश्वर के उद्धार की ज्योति की प्रतिज्ञा सभी देशों के लिए है। इसलिए यीशु सामरिया में उद्धार का सुसमाचार सुनाने को गया।

उत्तर लिखें

६. क्या यीशु सामरियों के मित्र थे?

..... क) नहीं! सामरी अन्य जाति और विधर्मी थे।

..... ख) हां! यीशु सभी से प्रेम करते थे।

..... ग) नहीं! सामरी अधिक पापी थे।

जीवन का जल

यीशु सामरिया के एक गांव के कुएं पर बैठ गये। चेले भोजन मोल लेने के लिए गए थे। उसी समय एक सामरी स्त्री जल भरने कुएं पर आई। यीशु ने उससे पानी मांगा। स्त्री को अचम्भा हुआ कि यीशु ने उससे बातें कीं।

> यीशु ने उत्तर दिया, "यदि परमेश्वर के वरदान को जानती, कि वह कौन है जो तुझसे कहता है: मुझे पानी पिला तो तू उससे मांगती, और वह तुझे जीवन का जल देता। "स्त्री ने कहा, हे प्रभु, तेरे पास घड़ा नहीं है, और कुआं गहरा है: फिर जीवन का जल तेरे पास कहां से आया?" यीशु ने उत्तर दिया, "जो कोई यह जल पीयेगा वह फिर पियासा होगा। परन्तु जो कोई उस जल में से पीएगा जो मैं उसे दूंगा, वह फिर पियासा न होगा: बरन जो जल मैं उसे दूंगा, वह उसमें एक सोता बन जाएगा जो अनन्त जीवन के लिए उमड़ता रहेगा।" यूहन्ना ४:१०-१४

प्यास लगने पर पानी की जरूरत पड़ती है। उसी प्रकार हमारी आत्मा को भी प्यास लगती है। जब तक यह आत्मिक प्यास बुझती नहीं तब तक हम असन्तुष्ट रहते हैं।

यह सामरी स्त्री शारीरिक प्रेम के द्वारा सन्तुष्टि पाने की खोज में थी। पांच बार उसका विवाह हुआ। जिस पुरुष के साथ वह रहती थी वह उसका पति नहीं था। स्त्री को देखते ही यीशु उसके विषय में सब कुछ समझ गये। यीशु जानते थे कि स्त्री के पाप जब तक क्षमा न होंगे वह अप्रसन्न रहेगी। इसलिए उसने इसके विषय में उसे बतलाया। स्त्री ने यीशु की बात मान ली।

सामरी स्त्री पहिचान गई कि यीशु परमेश्वर का जन अर्थात् नबी है जो उसकी सहायता कर सकता है। स्त्री ने पूछा, "परमेश्वर की उपासना कैसे करनी चाहिए?" यीशु के उत्तर मुखाग्र करें:

परमेश्वर आत्मा है, और अवश्य है कि उसके भजन करने वाले आत्मा और सच्चाई से उसकी उपासना करें।" यूहन्ना ४:२४

यीशु ने यह प्रकट किया कि वह स्वयं बचाने वाला है। स्त्री अपने उद्धारकर्ता से मिलकर आनन्दित हुई। तब से उसका सारा जीवन बदल गया। उसने प्रसन्नता के मारे लोगों को यीशु के बारे में बतलाया। उन्हें भी जीवन का जल चाहिए था।

उसके वचन के कारण और भी बहुतेरों ने विश्वास किया। और उस स्त्री से कहा, "अब हम तेरे कहने ही से विश्वास नहीं करते, क्योंकि हमने आप ही सुन लिया और जानते हैं कि यही सचमुच में जगत का उद्धारकर्ता है"। यूहन्ना ४:४१-४२

लोग नशीली वस्तु, प्रेम, भोग-विलास, शिक्षा, उच्चपद, धर्म-कर्म, या वैरागी जीवन में अनन्द ढूंढ़ते हैं। परन्तु इनमें कोई सन्तुष्टि नहीं है। केवल यीशु ही उद्धारकरता है जो आपकी आत्मिक प्यास बुझा सकता है।

प्रार्थना

"हे मेरे सृजनहार परमेश्वर, तू मेरी प्यासी आत्मा की आवश्यकता जानता है। मेरे पापों को क्षमा कर। मुझे जीवन का जल दे ताकि आत्मिक प्यास बुझे। मुझे सिखला कि मैं आत्मा और सच्चाई से तेरी उपासना करूं। मेरी सहायता कर कि मैं यीशु को जानूं कि वह मेरा और जगत का उद्धारकर्ता है।"

उत्तर लिखें

७. क्या आपने यीशु में सच्ची शान्ति पाई?

.....

क्या आप शान्ति पाना चाहते हैं?.....

उपरोक्त प्रार्थना को पांच बार पढ़ें।

एक धनवान को शिक्षा देना

एक बार एक धनी व्यक्ति दौड़ता हुआ यीशु के पास आया और दण्डवत करके

कहा, "हे उत्तम गुरू, अनन्त जीवन पाने के लिए मैं क्या करूं?" वह भले काम करने के द्वारा स्वर्ग के राज्य में प्रवेश पाना चाहता था। इस धनी व्यक्ति ने, हत्या, चोरी, झूठ बोलना, धोखा देना और व्यभिचार नहीं किया। वह अपने माता-पिता का आदर करता था।

वह अच्छा व्यक्ति था, फिर भी उसमें एक घटी थी कोई इतना भला नहीं कि स्वर्ग में प्रवेश पाए। उसका पाप स्वार्थ था। दूसरों की सहायता करने की अपेक्षा वह अपने सुख-विलास की चिन्ता करता था। वह परमेश्वर से अधिक धन से प्रेम करता था। सामरी स्त्री की तरह उसे भी उद्धार की आवश्यकता थी। सच्ची शान्ति और अनन्त जीवन पाने के लिए हमें परमेश्वर को प्रथम स्थान देना है।

> यीशु ने उस पर दृष्टि करके उससे प्रेम किया, और कहा, "तुझ में एक बात की घटी है: जा, जो कुछ तेरा है, उसे बेचकर कंगालों को दे, और तुझे स्वर्ग में धन मिलेगा, और आकर मेरे पीछे हो ले।" मरकुस १०:२५

यीशु उसे अनन्त जीवन देता जिसे वह पाना चाहता था। परन्तु वह बेचारा धनी पुरुष उदास होकर चला गया। उसने स्वर्गीय धन की अपेक्षा सांसारिक धन को चुना।

उत्तर लिखें

८. क्या धनी व्यक्ति ने सही चुनाव किया?

.....

९. क्या आप अच्छे बनने से स्वर्ग में प्रवेश पा सकते हैं?

.....